Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

धार्मिक स्थलों के विकास कार्य (धार्मिक नगर चित्रकूट के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. राजेश कुमार सिंह तिवारी*

* सहा. प्रा. (वाणिज्य) राजभान सिंह स्मा. महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत एक धर्म प्रधान देश है विंध्य की पवित्र धरती में अनेक तीर्थ मौजूद है जो हमारी सांस्कृतिक आस्था सामाजिक समरसता और आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र है, धार्मिक नगर चित्रकूट त्रेता युग के भगवान श्रीराम से सम्बन्ध रखता है। बनवास के समय श्रीराम सीता और लक्ष्मण चित्रकूट पधारे थे तथा वही पर बनवास का समय व्यतीत करने का निर्णय लिया था, किन्तु भाई भरत के चित्रकूट पहुँचने और श्रीराम को अयोध्या का राजतंत्र स्वीकार करने का कहा इस पर श्रीराम चित्रकूट मे रह कर बनवास के समय में इसे अवरोध माना और यहाँ से चलकर पंचवटी पहुचें।

चित्रकूट एक विशेष धार्मिक नगरी है यहॉ हर भारतीय की श्रद्धा जुडी हुई है। समाज के आकांक्षाओं के अनुरूप शासन ने चित्रकूट का विशेष विकास करने का निर्णय लिया है। यहाँ अमावास्या के दिन लगभग 5 लाख और अन्य दिन लगभग 20 हजार श्रद्धालु पहुँचते है तथा दीपावली के अवसर पर 35 से 40 लाख श्रद्धालु आते है। धार्मिक स्थलों का विकास करने से समाज की समस्त अभिलाषाएँ पूरी होती है।

शोध प्रविधि – इस शोध पत्र के लेखन में प्रत्यक्ष अवलोकन एवं लोगों से सक्षात्कार द्वारा प्राथमिक समंक एवं समाचार पत्रों, सरकारी विज्ञापनों एवं बजट पत्रकों के द्वारा द्वितीयक सामग्री एकत्रित की गई है।

चित्रकूट के मुख्य स्थान एवं विकास – चित्रकूट विन्ध्य पर्वतमाला के बीच बसा हुआ एक दिव्य धार्मिक स्थान हैं, जो भगवान श्री राम के जीवन से अपने गहरे धार्मिक सम्बन्धों एवं वनवास के दौरान बिताये गये समय को सजोये हुए है, जो एक प्रेरणा का स्त्रोत है। चित्रकूट के मुख्य दर्शनीय स्थान निम्न है–

1. **रामघाट –** यह घाट चित्रकूट का प्रवेश द्वार एवं हृदय स्थल है, जो मन्दाकिनी नदी के तट पर बना हुआ है। यहाँ पर भगवान श्री राम माता सीता एवं लक्ष्मण ने अपने 14 वर्षो मे से लगभग 12 वर्ष विताये थे। रामघाट में ही श्री राम स्नान करने के बाद यहाँ पर दीपदान किया करते थे आज भी लोगों के द्वारा घाट में स्नान करके दीपदान करते है। इसी घाट के पास गोस्वामी तुलसीदास की भगवत ज्ञान प्राप्ति हुई थी।

2. **जानकी कुण्ड –** शान्त जानकी कुण्ड एक प्राचीन और धार्मिक स्थल है जो रामघाट से 2 कि.मी. दूरी पर स्थित है, ऐसा कहा जाता हे कि इसका नामकरण माता सीता से जुड़ा होने के कारण इसको जानकी कुण्ड कहा गया। यहाँ पर मन्दाकिनी (गंगा) का घाट थोड़ा सकरा है जहाँ पर माता सीता स्नान करती थी। लोग यहाँ आध्यात्मिक आभा को आत्मसात करने के लिए आते है।

3. **स्फटिक शिला –** जानकी कुण्ड से कुछ ही कि.मी. आगे स्फटिक शिला स्थित है जिसमें भगवान श्री राम के चरणों का निशान है। ऐसा कहाँ जाता है कि यही पर माता सीता को भगवान इन्द्र के पुत्र जयंत ने चोंच मारी थी, जो उस समय कौवे के भेष धारण किये हुए थें।

4. **हनुमान धारा –** हनुमान धारा राम घाट से करीब 3 कि.मी. पर स्थित है यहॉ पर श्री हनुमान जी पंचमुखी मन्दिर है और हमेशा वहाँ जल बहता रहता है। इसके ऊपर की ओर जाने पर सीता रसोई है जो आस्था का केन्द्र है।

5. **गुप्त गोदावरी –** गुप्त गोदावरी रामघाट से 18 कि.मी. पर स्थिति एक पवित्र और मनोरम स्थल है यह एक प्राकृतिक गुफाओं का एक समूह हैं जो श्री राम व लक्ष्मण के वनवास से जुड़ा हुआ है। ऐसी मान्यता हैं कि श्री राम जी के चित्रकूट आगवन की जानकारी महर्षि गौतम की पुत्री गोदावरी जी को लगी तो वे नासिक से भगवना श्री राम के दर्शन हेतु भूमिगत मार्ग से होते हुए यहाँ आकर प्रकट हुई थी इस कारण इस गुफा का नाम गुप्त गोदावरी पड़ा।

6. **सती अनुसुइया आश्रम –** चित्रकूट में रामघाट से करीब 12 कि.मी. दूरी पर सती अनुसुइया का आश्रम है। अनुसुइया महर्षि कर्दम और देवहूति की पुत्री और ब्रम्हा की मानस पुत्री कपिल की बहन थी तथा महर्षि अति की पत्नी थी। सती अनुसुइया को वरदान स्वरूप दत्तात्रेय (विष्णु अवतार) चंद्रमा (ब्रम्हा के अंश) और दुर्वासा (शिव के अवतार) अनके तीन पुत्र हुए। उनकी कठोर तपस्या के कारण मंदाकिनी नदी पृथ्वी पर अवितरित हुई।

7. **कामदगिरि पर्वत परिक्रमा –** चित्रकूट में कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा का इतिहास त्रेता युग से जुड़ा है। इस पर्वत में वनवास के दौरान भगवान राम सीता और लक्ष्मण ने यहाँ रह कर अपना समय बिताया था। मान्यता के अनुसार भगवान राम ने स्वयं इस पर्वत को आर्शीवाद दिया था कि जो इसकी पंचकोसी परिक्रमा करेगा, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होगी। इस पर्वत के प्रमुख देवता कामतानाथ जी स्वामी है जिनके दर्शन मात्र से ही सभी दुख दर्द दूर हो जाते है। इसी परिक्रमा के अन्तर्गत लक्ष्मण पहाड़ी स्थिति है तथा इसमें चारों दिशाओं में चार मुखार बिन्दु है।

8. **भरत कूप –** भरत कूप की कहानी भगवान राम ने वनवास काल से जुड़ी हो जब उनके भाई भरत चित्रकूट में उन्हें अयोध्या का राजा बनाने के लिए सभी पवित्र तीर्थो का जल लेकर आये थें किन्तु भगवान राम के द्वारा

राजा बनने और अयोध्या वापस जाने से इंकार करने पर ऋषि अति की सलाह पर सारे जल को एक कुएँ में डाल दिया, जिससे इस कूप को भरत कूप कहा जाने लगा। इस कुएँ के जल से स्नान करने से समस्त तीर्थो के स्थानों का स्नान का फल प्राप्त होता है।

उपरोक्त धार्मिक स्थानों के अधोसंरचना विकास हेतु म.प्र. शासन द्वारा वर्तमान में धार्मिक नगरी चित्रकूट के विकास के लिए 11 कार्य लगभग 300 करोड़ के लागत से विकास कार्य करने का निर्णय लिया है। निम्नलिखित सारणी में विभिन्न कार्यो का विवरण एवं उनकी लागत राशि को दर्शाया गया है–

सारणी क्रमांक – 1: चित्रकूट के विकास कार्यो का विवरण

क्र.	विकास कार्य का विवरण	लागत राशि	अन्य विवरण
1.	फोरलेन 16 कि. सडक (मोहकम गढ़ तिराहा से पीली कोठी तक)	44.62 करोड़	–
2.	अन्डर ग्राऊण्ड विद्युतीकरण	11.13 करोड़	–
3.	सभी वार्डो में 60 कि.मी. पाइप लाइन	7.49 करोड़	–
4.	कामदि गिरि परिक्रमा पथ	36.84 करोड़	–
5.	अध्यात्मिक घाट (राधव प्रयाग घाट)	27.21 करोड़	–
6.	श्रीराम संस्कृति वन	12.53 करोड़	–
7.	मंदाकिनी/पैसुनी नदी पुर्नजीवन	1.83 करोड़	–
8.	सीवर प्रोजेक्ट	32.08 करोड़	–
9.	गुप्त गोदावरी से मोड़ तक	81.00 करोड़	–
	(14 कि.मी. फोर लेन)		
10.	चित्रकूट मंदाकिनी घाट निर्माण	24.62 करोड़	–
11.	सतना चित्रकूट फोरलेन (डी.पी.आर. स्टेज में)	25.00 करोड़	–

स्त्रोत– नगर प्रशासन चित्रकूट, एक रिपोर्ट

उपरोक्त सारणी में स्पष्ट है कि समाज की मंशानुसार शासन चित्रकूट नगरी का विकास कार्य को अंजाम देने का निर्णय लिया है जिसे भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों में चित्रकूट का नाम भी सर्वोच्च स्थान पर होगा तथा देश–विदेश से पर्यटक चित्रकूट नगरी पहुॅचेगें तथा वनवास श्रीराम के आर्दशों का स्मरण करेगे इससे न केवल आवागवन बढेगा बल्कि आर्थिक गतिविधिया तेज होगी लोगो को रोजगार मिलेगा तथा साम्प्रदायिक सद्भाव एवे समरसता में वृद्धि होगी तथा स्वस्थ्य सांस्कृतिक, एवं अध्यात्मिक आचरण का विकास इस प्रकार समस्त समाज देश की एकता एवं समृद्धि और विदेशी सहयोग मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करेंगा।

निष्कर्ष – निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि पवित्र नगरी चित्रकूट के विकास की दिशा में यह शासन का महत्वपूर्ण कदम है जो आगे और विकसित करने की दिशा में बढेंगा तथा एक स्वस्थ्य सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास की दिशा में और आगे बढ़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. समाचार पत्र दैनिक भास्कर
2. 5 नवम्बर 2025

****